पूज्य महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज की डायरी

तिथि ७-२-५७ से २२-५-५७

दिव्य वाणी



प्रकाशक :

वैदिक भक्ति साधन आश्रम,

आर्य नगर, रोहतक

१८-८-८३ मूल्य १-२५

CamScanner से स्कैन किया गया

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

त्वं जीव शरदः शतं वर्धमानः

अपने प्रिय पौत्र महेश आहूजा (फरीदाबाद) १८-८-८३ के जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर श्री मतवालचन्द आहूजा ६६,आर्य नगर रोहतक ने यह पुस्तक छपवा कर महाराज जी के प्रति आश्रम के ट्रस्टी होने के नाते आगाध श्रद्धा प्रकट की है। यह आहूजा परिवार आश्राम के प्रत्येक यज्ञ में जल सेवा का पुनीत कार्य अपने कन्धे पर लेकर जनता का आशीर्वाद प्राप्त करता है। भगवान आयुष्मान महेश को शतायुः प्रदान करें।

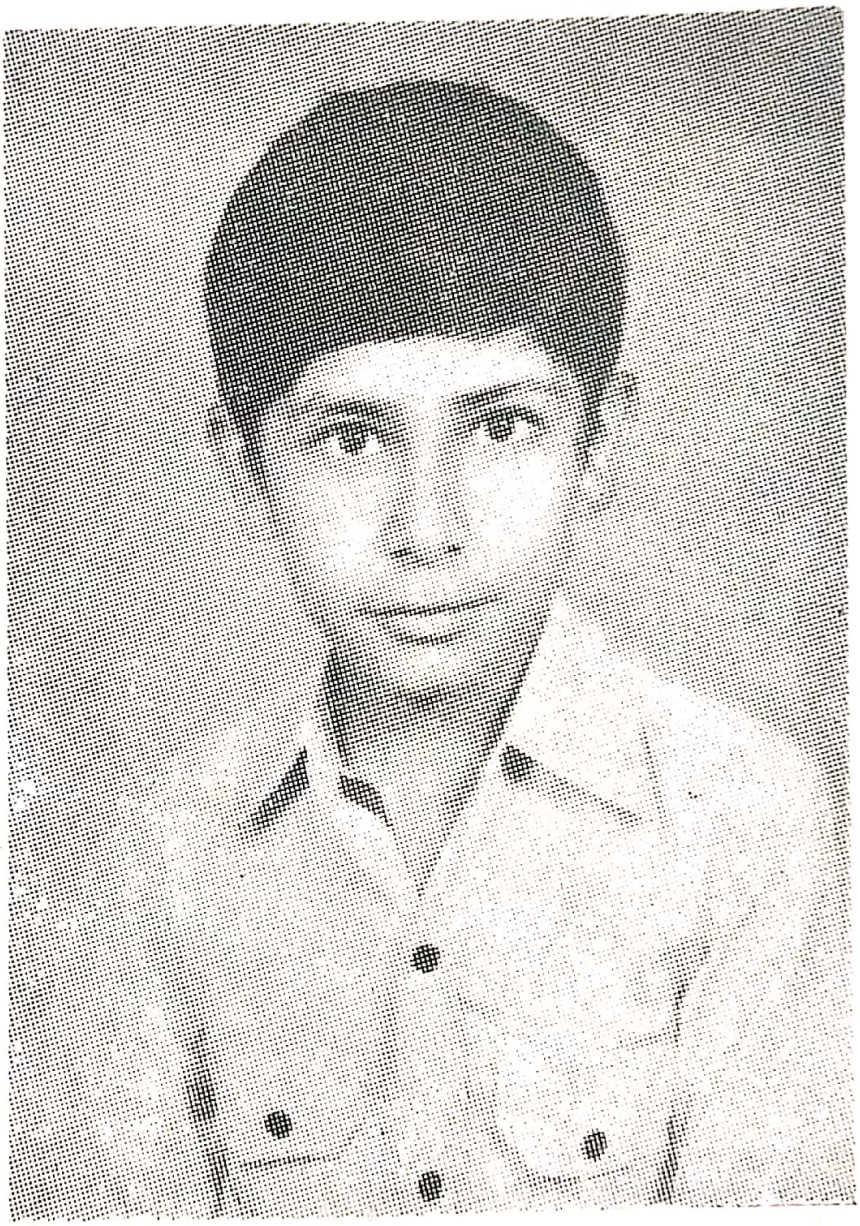
सम्पर्क : 9029421718

—प्रकाशन विभाग

पीडीएफ : आचार्य धर्मधर आर्य

CamScanner से स्कैन किया गया

त्वं जीव शरदः शतं वर्धमानः



मास्टर महेश आहूजा सुपुत्र डा० नारायणदास
आहूजा (फरीदाबाद शहर)

CamScanner से स्कैन किया गया

दिव्य-वाणी

७-२-५७ संस्कार विधि में यज्ञोपवीत संस्कार समय आचार्य शिष्य से कहता है, "तेरे तीन गुरु हैं, इन्द्र तेरा गुरु है, मैं तेरा आचार्य हूं।" आज इस का दृश्य मालूम हुआ।

मनुष्य की दीक्षा तीन बार होती है, पहली विद्या ग्रहण के लिए, जो गुरु मन्त्र गायत्री समझा कर आचार्य (मनुष्य) शिष्य को देता है। दूसरी दीक्षा यज्ञ कार्य सम्बन्धी निष्काम कर्म करने की, वह अग्नि यज्ञ अग्नि स्वयं शिक्षा देती है, जो योग बुद्धि और यज्ञ हृदयसे यज्ञ अग्नि द्वारा परमेश्वर की पूजा करना है। तीसरी दीक्षा देव दीक्षा, जो प्रभुदेव इन्द्र रूप से किसी अव्यक्त मुक्त, सिद्ध पुरुष द्वारा ध्यान समाधि में आत्म साक्षात कराने के लिए देते हैं।

पहली दीक्षा विद्या (ज्ञान) प्राप्ति के लिए, दूसरी दीक्षा कर्म में प्रवेश कराने के लिए, संसार के साथ और देवताओं से सम्बन्ध जोड़ने के लिए।

CamScanner से स्कैन किया गया

तीसरी दीक्षा उपासना, प्रभु दर्शन आत्म दर्शन के लिए।

भिन्न शब्दों के उच्चारण से विविध प्रकार की ग्रन्थियां खुलती हैं और मन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। सब प्रकार के शब्द कंठ से ओष्ठ प्रयन्त बोले जाते हैं, उन सब का प्रभाव सूक्ष्म ज्ञान तत्वों पर उनमें गति पैदा करने से होता है। यह ज्ञान तन्तु केवल मस्तिष्क तक सीमित नहीं, बल्कि पांव से लेकर सिर तक फैले हुए है, जैसे पांव में कांटा चुभता है, या पांव में कंकड़ अटकता है, तो तत्काल सिर में अनुभव होता है, वह समझने वाली नसें मस्तिष्क में और हाय कराने वाली हृदय में हैं,इसलिए प्रत्येक शब्द के उच्चारण का प्रभाव सम्बन्धित केन्द्र पर पड़ता है। शब्द के अर्थ और भाव को न समझकर बोला जावे,तो शब्द का प्रभाव अवश्य पड़ेगा, परन्तु दिल और दिमाग़ की नसों पर नहीं। वह जिस-जिस स्थान से शब्द निकला उच्चारण हुआ है, वहां-वहाँ के स्थान पर प्रभाव करेगा, उन नसों का विकास करेगा, बार-बार करने पर उसके सूक्ष्म भाग पर प्रभाव करेगा, जो संस्कार बनायगा। यदि अर्थ समझकर बोले जावें, तो मस्तिष्क की नसों का विकास करेगा, यदि भाव समझ कर बोला जावे, तो हृदय पर

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रभाव करेगा। एक शब्द के जिस अर्थ जिस भाव को लेकर उच्चारण किया जावेगा, उसी प्रकार के सामान्य परमाणुओं को सूक्ष्म प्रकृति से खेंच कर उसी स्थान पर प्रभाव करेगा और खूब प्रभाव करेगा। जिस शब्द के अर्थ ही एक होंगे, वह दूसरे अर्थ का प्रभाव न करेगा।

गायत्री मन्त्र के एक-एक शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं और वह अर्थ भी एक शृंखला रूप से बंधे हुए हैं, इसलिए गायत्री मन्त्रों के शब्दों का उच्चारण और जाप उन-२ सब नसों पर प्रभाव करेगा, यदि अन्तः-करण की शुद्धि के लिए किया जावेगा। हां यदि किसी स्वार्थ सिद्धि के लिए किया जावेगा, तो जैसे एक अर्थ और भाव होगा, उसी के अनुसार परमाणु खेंचकर एक ही प्रभाव करेगा, उदाहरण भूः का अर्थ है सत्, भुवः का चित्, स्वः का आनन्द, इसका विस्तार पीछे आ चुका है, कि सत् चित आनन्द की प्राप्ति के लिए किया जावे, तो इसका साधन भूः प्राण, भुवः अपान, स्व. व्यान, इनको वश में करने से, इनका ज्ञान होने से प्रभु की प्राप्ति होगी। इसका ज्ञान कैसे होगा ? भूः ऋक्, भुवः यजुर्वेद, स्वः सामवेद से इस ज्ञान का प्रयोग कैसे किया जावे। भूः कर्म, भुवः उपासना और स्वः

CamScanner से स्कैन किया गया

ज्ञान···कर्म उपासना ज्ञान द्वारा इत्यादि ।

१३-२-५७ पृथ्वी का शाप=पृथ्वी माता हर प्रकार का अन्न और धन देती है । सोना, चांदी,हीरा, अभ्रक, नीलम, कोयला, तांबा, पैट्रोल आदि । मनुष्य इतना धन पाकर, सुखके समान प्राप्त करके जब माता पिता को अन्य प्राणियों को देने से कंजूसी करता है उसे थूक, खंगार, गंद, विष्टा से दूषित करता है और अकड़ कर लताड़-२ कर चलता है,तब पृथ्वी माता उसे शाप देती है, वह सुख और शांति प्राप्त नहीं कर सकता । जल देवता पिता है, जीवों को धन और शांति सुख और हरयावल देता है और रक्त, सूत्र और वीर्य रज, जिससे स्वास्थ्य और कान्ति और तेज प्रदान करता है । जो मनुष्य दूसरों का रक्त सुखाता चूसता, रजवीर्य दुराचार और विषयों में व्यर्थ करता है, उसे जल देवता शाप देते हैं उनके रजवीर्य में संतान उत्पत्ति के कण नहीं रहते या रजवीर्य निर्बल या निपुनसक बना देता है ।।

अग्नि देवता—अग्नि प्रकाश देती है, अर्बोपति बना देती है । जो अग्नि पर मांस-अंडे दुर्गन्ध पदार्थ पकाता है,अग्नि का निरादर करता है, अग्नि उसे शाप देती है, निर्बल जिगर काला खोटा दिल बनाती है, और जनवियोग कराती है ।

CamScanner से स्कैन किया गया

पवन देवता जीवन दान देता है, गुरु है जो सिग्रेट आदि पदार्थों से वायु को दुर्गन्धित करता है, उसे वायु देवता शाप देता है, दमा, तपेदिक का रोग बुद्धि भ्रष्ट कर देता है। आकाश देवता जो सब का आधार है, उसकी जो निन्दा अपशब्दों से दूषित करता है, उसे वह निराश्रय कर देता है, मोहताज बना देता है।

सारांश जो मनुष्य इन देवताओं के गुणों की कदर (उपेक्षा) नहीं करता, गुण धारण करने के स्थान पर उनका निरादर करता है और उन के निरादर से संसार के प्रबन्ध को बिगाड़ता और प्राणियों को हानि पहुंचाता है, तो यह देवता मनुष्य के सात्विक भागों को जो मानव शरीर में इन देवताओं ने दिये हुए हैं,निर्बल बलहीन कर देते हैं, जिस से वह निरोग नहीं रह सकता।

इन सब देवताओं का सात्विक भाग मनुष्य में निम्नलिखित है—

पृथ्वी के सात्विक भागसे शरीर में नस-नाड़ी मांस हड्डी बनती हैं। हड्डियों के जोड़ में दर्द, हड्डी का टूट जाना, पट्ठे कमजोर हो जाने, पट्ठों में दर्द, नस नाड़ियों में उलझन, आंतों का रोग इत्यादि-२ रोग हो जाना है।

CamScanner से स्कैन किया गया

जल के सात्विक भाग से शरीर में सूत्र रक्त, चर्बी, थूक पीप रजवीर्य बनता है। तब मूत्र रोग, धातु रोग, रक्त दोष, चर्बी का अधिक न्यून, शरीर का फूल जाना या लचक न रहना, थूक में जर्मज, रज वीर्य में दोष, बवासीर से रोग लग जाना।

अग्नि का सात्विक भाग शरीर में जठर अग्नि के रूप में है, जठर अग्नि के मन्द होने से आमाशय,जिगर कमजोर, भोजन का अपच और अधिक होने से पित का बढ़ जाना आदि नाना प्रकार के गैस और ऐसड पेट में पैदा होने से डकार, बदहाजमा अतिसार कब्ज आदि के रोग में ग्रस्त रहना, रोग लग जाता है।

वायु के सात्विक भाग से प्राण शरीर में काम करता है; तब प्राण निर्बल जीवन शक्ति और दिल कमजोर, अपान के रोग, उदान के रोग, काम क्रोध और अहंकार कठोरता और असंयमी जीवन, संयम न कर सकने की सामर्थ्य का रोग बन जाता है, फेफड़े काम नहीं करते, तब दमा तपेदिक खांसी आदि का रोग लग जाता है। प्राण का सम्बन्ध शरीर और आत्मा से है, तब आयु भी घटती है।

आकाश का सात्विक भाग हृदय आकाश शरीरमें है। इसके बिगड़ने से हृदय और बुद्धि दूषित हो जाती

CamScanner से स्कैन किया गया

है। इस लिए शास्त्रकारों ने कहा, देवताओं को जो प्रसन्न करता हैं, देवता उसे हर प्रकार का सुख देते हैं। प्रत्येक देवता मानव शरीर के सात्विक भागों को पुष्ट करता है।

यज्ञ अग्नि होत्र ही इस का एक मात्र साधन है। पुण्य कर्म पूर्त कहलाते हैं वह प्राणियों के साथ सम्बन्ध तो रखते हैं मगर देवताओं के साथ उनका सम्बन्ध नहीं होता। अपूर्व पुण्य कर्म उदारता के संस्कार बनाते हैं। मगर पवित्रता,नम्रता या सहनशीलता और सत्यता के नहीं बनाते। सत्यता और पवित्रता उनमें मुख्य है अग्नि होत्र से अग्नि सब पदार्थों को सब भाग अपने-अपने तत्वों में परमाणु बना कर मिला देती है। इसलिए प्रत्येक तत्व या देवता अपने-अपने सात्विक परमाणुओं जो अग्नि के संग से सूक्ष्म होकर एक हो गए हैं। वह याजक को सात्विक परमाणु अनेक संख्या में प्रदान करते हैं। इसलिए यज्ञ को वेद ने श्रेष्ठतम कर्म कहा है।

मनुष्य अपने जीवन काल में शरीर के लिए जरूरियात अन्न वस्त्र और मकान (भूख प्यास की तृप्ति के लिए अन्न जल, नंग सर्दी गर्मी से बचाव के लिए वस्त्र और विश्राम आराम के लिए मकान की)

CamScanner से स्कैन किया गया

जरूर चाहियें, मगर मन के मन की ख्वाहशात और मनोरंजन (ख्वाहशात, उत्तम खान-पान फल मेवा आदि) मनोरंजन सिनेमा ग्रामोफोन, रेडियो, कुर्सी, मेज, गालीचे, मोटर इत्यादि तो सब धन से पूरी होती हैं मगर कई जरूरियात और इच्छाएं मनोरंजन ऐसे भी हैं,जो सिवाए प्रभुदेव के कोई पूरा नहीं कर सकता प्रभु की शरण ही उसे पूरा करती है–उदाहरण– आत्मिक शान्ति, पुत्र इच्छा।

ब्रत सत्यनारायण देवियां रखती हैं सत्यनारायण की कथा सुनती हैं अथर्ववेद के पवित्र चार मन्त्र जो पूर्णमाशी के हैं, वास्तव में यही कथा है। पूर्णमाशी का यज्ञ अक्षय सुख और स्वर्ग सब कामनाओं का पूर्ण करने वाला है। ब्रत ब्र=प्राप्त करना, त=शक्ति और तेज। किसी कमी को पूरा करने के लिए ब्रत किया जाता है। आत्म तेज की कमी, मानसिक शक्ति या शारीरिक शक्ति की कमी। इन्द्रिय दमन (जितेन्द्र-यता) से शारीरिक शक्ति, कान्ति बढ़ती है और शिव संकल्प पश्चाताप, आत्म निरीक्षण से मानसिक बल और प्रभु भक्ति जप ध्यान से आत्मिक तेज बढ़ता है। ब्रत में जिस साधक को अपने कुसंस्कार, वासनाएं और किए पाप सामने आ-आ कर दर्शन देते हैं और

CamScanner से स्कैन किया गया

उनका दुःख होता है और रुदन होने लगता है। शरीर में कपकपी मचती है, प्रभु से प्रार्थना करता है, समझो उसकी मानसिक कुवृत्तियां घुल जाती हैं।

१४-२-५७ शरीर और आत्मा का मेल कौन करता है ? प्राण ! किस लिए करता है ? कर्म फल भोगके लिए और कर्म करने के लिए भूख, प्यास प्राण को लगती है, शरीर तृप्त होता है। आंख को भूख लगती है रूप की, कान को शब्द की, इस तरह से तृप्ति होती है मन की। जब प्राण बाह्य इन्द्रियों में न लग कर परमात्मा के अर्पण हो जाता है तब उसे संसार का कोई विषय और भूख प्यास नहीं रहती। योगी कई-कई दिन समाधिस्त रहकर प्रभु आनन्द लेता है। इच्छा कर्म कराती है, भोग इच्छा रहित होने से आत्मिक बल का विकास होता है। प्राण जो हम बाहिर से लेते हैं, यह तो फेफड़ों में जाता है। हमारे अन्दर एक सूक्ष्म प्राण है जो सदा आत्मा का संगी है। आत्मा का प्रतिबिम्ब जब चित्त पर पड़ता है तब चित्त से दो शक्तियां पैदा होती हैं। एक ज्ञान दूसरा सूक्ष्म प्राण। सूक्ष्म प्राण क्रिया करताहै। सब अंगोंमें जीवनी शक्ति देता है। बल जो बढ़ता है, तो सूक्ष्म प्राण से। यह बल बढ़ता है, जब मनुष्य यज्ञ करता है कि इस

CamScanner से स्कैन किया गया

भावना से कि प्राणीमात्र का कल्याण हो। परमात्मा अर्पण करता है, याजक इस वायु को सुगन्धित बनाकर बलवान करता है। जब यज्ञ से करोड़ों प्राणियों को शुद्ध प्राण मिलेगा तो उनके प्राण में याजक का प्राण प्रवेश हो जाता है, तो प्राण बढ़ जाता है। सब इन्द्रियों में शुद्ध प्राण जाने से सब इन्द्रियां पवित्र हो जाती हैं। यज्ञ से दुःख दूर होते हैं, तो याजक को शारीरिक, मानसिक, आर्थिक,बौद्धिक दुःख नहीं होता, बुद्धि और मानसिक बल बढ़ता है। सबको सुख की भावना से यज्ञ करने वाले को आत्मिक शान्ति मिलती है।

१५-२-५७ आंख देखती हैं, यह उसका कर्म है, कान सुनते हैं, यह उनका कर्म है, इस कर्म का परिणाम ज्ञान है, किसका ज्ञान ? उस पदार्थ का ज्ञान, जिसके साथ इन्द्रिय का मेल होता है, इसका नाम योग है, परन्तु इसका मेल कराने वाला मन होता है। जहां जिस इन्द्रिय के साथ मन लगता है, तभी इन्द्रिय कर्म कराती है, परन्तु ज्ञान वृद्धि कराती है।

एक बच्चा किसी चित्र को देखता है चित्र को उठा लेता है। वह चित्र मानो भगवान कृष्ण का है, थोड़ी देर में वह चित्र को तोड़ने मोड़ने लग जाता है, उसे केवल सौंदर्य पसन्द आया और समझ नहीं ! जब

CamScanner से स्कैन किया गया

ज्ञान हुआ तो तब चित्र को लटका देता है, फाड़ता नहीं। घड़ी जो बहुत कीमती है, बच्चा उठाता है, उस की टिकटिक को कान से लगाकर बार-बार सुनता है और समझ न होने से घड़ी को तोड़ फोड़ भी देता है। जब समझ आती है तब टिकटिक की बजाय उससे समय को देखता है और आगे समझ नहीं। जब बिगड़ती है तो मुरम्मत करना नहीं जानता, घड़ीसाज़ के पास ले जाता है।

लोग भगवान कृष्ण की मूर्ति बनाकर लाखों रुपये का मन्दिर बनाकर उसमें स्थापित करते हैं, धूप दीप जगाते हैं, स्नान कराते हैं, माथा टेकते हैं परन्तु बुद्धि ने उसे परमेश्वर नहीं समझा। नहीं तो दर्शन करके फिर और रूपों पर क्यों मस्त होते! यह सब ज्ञान योग से होता है इसलिये योग की आवश्यकता है।

१७-२-५७ किसी का गाम मैला, किसी का काम मैला, किसी का नाम मैला, किसी का जाम मैला, किसी का चाम मैला, किसी का दान मैला, किसी का बान मैला, किसी का ज्ञान मैला तो किसी का ध्यान मैला होता है।

२. मन का (१) जब आँख में प्रवेश होता है तो आंख का देवता उसे अपने गुण अर्पण करता है।

CamScanner से स्कैन किया गया

(२) जब कान से मेल होता है तो उसका देवता अपना गुण भेंट करता है। इस तरह जिस जिस इन्द्रिय के साथ वह मेल करता है उसके मन के देवता का। ऐसे ही जब मन का सुष्मणा नाड़ी में प्रवेश होता है तो उस नाड़ी का देवता ज्ञान और शान्ति प्रदान करता है।

२३-२-५७ सब जड़ और चेतन इस प्रभुदेव का बनाया हुआ है और सब इसकी सम्पत्ति है इस लिये अपने परम-पिता की समस्त सृष्टि का आदर करना चाहिये। जड़ बुद्धि से न आदर सत्कार करना चाहिये और न तिरस्कार व अपमान, यही बुद्धि की विशेषता है। यदि जड़ बुद्धि से आदर या तिरस्कार किया गया तो सिवाय दुःख और अशान्ति के और कुछ भी फल न मिलेगा। ऋषि दयानन्द का पहला नियम "सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये'। बहुत सात्विक और मार्मिक है। जड़ बुद्धि से किये सत्कार या तिरस्कार से सात्विकता नष्ट हो जाती है तथा मानवता क्षीण हो जाती है। सात्विकता के नष्ट हो जाने से देवताओं का कोप हो जाता है और देवताओं के शाप या कोप से मनुष्य को सब प्रकार के दुःख घेर लेते हैं।

CamScanner से स्कैन किया गया

यदि मनुष्य अपनी सात्विकता को बढ़ाना चाहे या नष्ट की हुई को फिर से वापिस लाना चाहे तो इसका एक मात्र साधन यज्ञ है। यज्ञ की भावना से किया हुआ यज्ञ समस्त प्राणी-मात्र और अप्राणी-मात्र के अन्दर अपना प्राण प्रविष्ट कर देता है। जब वह सब का प्राण-जीवन बन जाता है तो कोई देव या अदेव उससे शत्रुता नहीं करेगा।

२५-२-५७ नित्यकर्म हवन-यज्ञ में दो प्रकार की स्वाहा की क्रियाएं की जाती हैं—एक स्वाहा अपने यज्ञ के लिये, दूसरी स्वाहा संसार के लिए। साधारण याजक दूसरी स्वाहा को तो क्रियात्मिक रूप से करते हैं और प्रथम स्वाहा को शाब्दिक रूप से करते हैं। आचमन और अंग स्पर्श की क्रिया जल से अपने लिये है। अपने हृदय की शान्ति के लिये और इन्द्रियों के संगठन के लिये कि मेरी हो जावें और अग्नि में आहूतियां संसार के लिये हैं।

१-३-५७ भगवान से मत कहो कि मुझे यह बनाओ या वह बनाओ, केवल यही प्रभु देव! मुझे स्वीकार करो अपना निकटवर्ति बनाओ। भक्त बनाओ चाहे सेवक भृत नौकर बनाओ चाहे पुत्र बनाओ चाहे स्त्री बन्धु सखा बनाओ चाहे पति बनाओ चाहे पिता और माता

CamScanner से स्कैन किया गया

बनो चाहे शिष्य बनाओ चाहे कुछ और जो आप चाहो मुझे अपने खजाने से बखशो, और अपना ही कार्य कराओ कोई भी कार्य जो आप तुम चाहो जैसे सरकार का कोई चौकीदार है कोई सिपाही कोई कप्तान कोई अर्दली कोई वजीर सभी सरकार के खजाना से खाते और सरकार का ही काम करते हैं, सब सरकारी आदमी कहलाते हैं।

२-३-५७ ऐ सद् गृहस्थी, व सद् गृहस्थिनी धनी वा मानी ! चाहे सब धनी मानी वजीर अमीर साधु संत महात्मा तेरे घर पर तुझे मिलने आते हैं और तू इस में अपना गौरव समझ कर अत्यन्त प्रसन्न होता है परन्तु यह याद रखो, गुरु चरणों और गुरु दर्शनों के लिए तू स्वयं जा कर उन के स्थानों पर पहुंचने का हार्दिक भाव और चाहना किया कर उसी में तेरा गौरव होगा। उनको अपने घर पर बुलाकर दर्शन करने में अपना मान न समझना और साधु संतों को तो दान दक्षणा भेंट सेवा से प्रसन्न करके आशीर्वाद पा लेगा। और अपनी बड़ाई भी करता रहेगा परन्तु गुरु को केवल अपने मान बढ़ाई के लिए बुलायेगा तो फिर उनका भार किसी सेवा से न उतर सकेगा। उनकी चाह अथवा तेरी जरूरत को पूरा करने केलिए

CamScanner से स्कैन किया गया

वह स्वयं आवें या तू दुःख निवृति के लिए बुलावे तो तेरा सौभाग्य है तेरा कल्याण है। किसी हाल व काल में अपना मान बढ़ाने का साधन गुरु को न बनाना, उन का मान स्थान बढ़ाने का तू स्वयं साधन बना रहने की लालसा कर। गुरु सेवा करके अपना कल्याण समझते रहना अभिमान न करना न अभिमानसे प्रकट करना।

४-३-५७ जिस प्रकार मनुष्य की वृत्ति अन्दर चित में अपने आप संस्कारों से पैदा होती है या मनुष्य अपने संकल्प से बनाता है और बाह्य शरीर के अंगों और इन्द्रियों की क्रिया करने लगताहै। तत्काल शरीर में तत्वों की भी वैसी क्रिया होने लगती है या आकृति बनने या धारा लहरें बनने लग जाती हैं। यदि बिना ज्ञान के क्रिया होती है तो अन्दर आकृति तो बनेगी परन्तु उन तरंगों का प्रभाव मन बुद्धि पर न पड़ेगा वह विलीन हो जावेंगी जैसे नदी में अनेक लहरें पैदा होती और विलीन होती रहती हैं परन्तु जो लहरें एक विशेष स्थान पर एक हो कर घुमर घेर (बार-बार अभ्यास) डालती हैं वहां भंवर गुफा बन जाती है जो अपने में आई वस्तु को नीचे तह में ले जाती है। ठीक इसी प्रकार जो वृति और क्रिया हमारी पूजा-पाठ आदि में ज्ञान सहित अभ्यास करती है वह हृदय और

CamScanner से स्कैन किया गया

मस्तिष्क की तह में पहुंच जाती है। जैसे उदाहरण के रूप में हम संध्या करते समय अंगूठा को तर्जनी अंगली के आधीन मिलाकर बैठते हैं अगर हमने पूरे संयम से ऐसा किया है तो उसका आंकार भी हमारे मस्तिष्क में हृदय में एक बन जावेगा। यदि संयम नहीं तो वह बनकर विलीन हो जायगा।

ब्रह्मांड आकाश जब साफ न हो, बादलों आंधी आदि से घिरा होता है तो तार टैलीफोन वायुयानों को मार्ग नहीं मिलता, ऐसे ही जब हृदय आकाश शुद्ध पवित्रन हो तब साधक मनुष्य की सुनवाई नहीं होती। प्रार्थना स्तुति की और ध्यान नहीं जमता मार्ग रुक जाता है प्रगति नहीं होती।

६-३-५७ मनुष्य की उन्नति शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक कब समझनी चाहिए ?

(१) स्वास्थ्य,धन और मान से शारीरिक उन्नति (२) यज्ञ दान और तप से मानसिक (३) धारणा ध्यान समाधि से आत्मिक उन्नति समझनी चाहिए। यह सब पूर्व कर्मों के फल स्वरूप प्रभु की कृपा और दया से मिलती है। जितना-२ किसी का पुण्य कर्म होता है, तामसिक, राजसिक, सात्विक उनके अनुसार उतना-उतना स्वास्थ्य उतना धन उतना मान मिलता

CamScanner से स्कैन किया गया

है उतनी ही यज्ञ में प्रवृत्ति यज्ञ का करना। सत्य में सामर्थ्य और दान की रुचि और दान करने में होती है। ऐसे ही धारण ध्यान समाधि में प्रभु की दया से जितना-जितना अहं प्रभु के अर्पण होता है उतना-उतना ही उस

अथर्व वेद कांड ४ सूक्त मन्त्र—नमस्कारेण ते नमसा जुहोमि मा देवानाम मित्युया भागम् प्रभु की भक्ति आदर पूर्वक नमस्कार से करें और प्रभु के देव (विद्वान भक्त योगी महात्माओं) के दिये ऐश्वर्य को दुष्ट कर्मों में नष्ट न करो।

बाहर के शत्रु तो उन शस्त्रों से मारे जायेंगे जो हिंसा वाले होंगे। बिना हिंसा बाह्य के शत्रु नहीं मर सकते न वश में आ सकते हैं उस विजय में क्रोध शस्त्र होगा और विजय पर अहंकार हो जावेगा और मोह, लोभ बढ़ेगा, परन्तु आन्तरिक शत्रुओं काम, क्रोध लोभ, मोह अहंकार पर विजय पाने के लिए अहिंसा का शस्त्र चलेगा, पवित्रता आएगी नम्रता आएगी संतोष और प्रेम बढ़ेगा, शान्ति की प्राप्ति होगी ये शस्त्र सत्य ज्ञान व प्रभु भक्ति प्रभु शरण से प्राप्त होंगे।

९-३-५७ बल से पुरुषार्थ करो, बुद्धि से प्रभु में

CamScanner से स्कैन किया गया

विश्वास धरो, प्रारब्ध से मन में संतोष भरो, फिर न तुम में ईर्षा उत्पन्न होगी न अधीर होंगे आलस्य और पाप अपने आप भाग जायेंगे।

११-३-५७ क्या मन का भी दर्शन हो सकता है? हां हो सकता है जैसे आंख को सूर्य नारायण इस का देवता प्रकाश देता है शीशे में अपनी आंख को देख सकते हैं। यदि अंधेरा हो तो शीशे में भी नहीं देख सकते इसी प्रकार मन का साक्षात दर्शन भी उस का देवता ही करा सकता है। मन का ऋषि शिवसंकल्प देवता समष्टि मन है। आंख को सूर्य कब दिखाता है, जब आंख खुली हो बन्द को नहीं। फिर मन कैसे खुले अर्थात मन का विकास कैसे हो शिवसंकल्प से यज्ञ तप और दान से। समष्टि मन में प्रभु का संकल्प रहता है वह संकल्प यज्ञ करता है। यह खुलता है उस में विकास और पवित्रता आती है। दान से उदारता लोभ की निवृत्ति और तपसे जितेन्द्रियता सहन-शीलता पवित्रता काम की निवृत्ति और यज्ञ से नम्रता प्रेम अहिंसा और क्रोध निवृत्ति होती है। इससे मन में चेतना आती है और 'मनः सत्येन शुद्ध्यति' बन तब मन का दर्शन होता है। यह शिवसंकल्प अर्थात वह संकल्प जो प्रभुदेव का संकल्प है, शिव संसार के लिये

CamScanner से स्कैन किया गया

कल्याणकारी तब मन का दर्शन होता है। अपने मन को समष्टि मन से सम्बन्ध जोड़ने के लिए यज्ञ दान तप आवश्यक हैं। दान का अर्थ त्याग भावना है जो यज्ञ का पर है तप भी यज्ञ का पर है।

देखो यजुर्वेद (अ० ४ म० ६)

यूं समझो व्यष्टि मन का देवता समष्टि मन है इसका दर्पण शिवसंकल्प है। जब व्यष्टि मन में शिव-संकल्प होगा तो उस शिवसंकल्प में समष्टि मन का प्रतिबिम्ब पड़ेगा तब मन का साक्षात हो जायेगा।

१९-३-५७ उस व्यक्ति का मान होता है, जिस की बाणी शुद्ध शब्द उच्चारण करती है। उससे भी अधिक मान उसका होता है जिसकी बाणी शब्दके मर्म को समझ सकतीहै उससे भी अधिक मान उसका होता है जिसकी बाणी सत्य पवित्र मधुर बोलती है कटु और निन्दा नहीं करती। मनुष्य वही अधिकारी बनता है जो उदार और विनम्र है उससे अधिक वह अधिकारी है जो सहनशील है उससे भी अधिक बलवान वह होता है, जिसका मन घृणा और ईर्षा से पवित्र पाक है।

मनुष्य का झुकाव वहाँ होता है जहाँ कोई आश्-चर्य या चमत्कार देखता है। मानव बुद्धि (विज्ञान) के चमत्कार और प्रभु की लीला यह दो मनुष्य को

CamScanner से स्कैन किया गया

झुकाते हैं। मानव बुद्धि का चमत्कार मनुष्य को नास्तिक बनाता है और प्रभुकी लीला मनुष्य को भक्त और आस्तिक बनाती है। मृग घास खाए और कस्तूरी बनाए। शहद की मक्खियां किस प्रकार हर पौधे से मिठास निकाल लाती हैं। गाय खाती घास है, पीती पानी है परन्तु इसके मूत्र गोबर में क्या अद्भुत गैस बना दो कि बुद्धिमान इससे चक्कियाँ और पंखे चला लेता है। गाय का मूत्र कैसे बनता है कि इसमें नाई-ट्रोजन विशेष·····पैदा हो जाती है।

२२-३-५७ चक्रों का खुलना कैसे होता है हरएक चक्र की पंखड़ियां जो हट योग वालों ने दर्शाई हैं यह चक्र (Plexus) एक प्रकार के (Centre) हैं, उनके अन्दर विद्युत रहती है। जब अभ्याससे इन पर दबाव पड़ता है, अपान और प्राण मन और प्राण का मेल एकाग्रता होती है, तब वह विद्युत टपकती है उनकी चमक पंखड़ियों के रूप में प्रतीत होती है जैसे मूला-धार की=४, स्वाधिष्ठान की=६, मनीपुर की=१०, अनाँहत की=१२, विशुद्धि की=१६, आज्ञा चक्र की=२१ यही चक्रों का खुलना है।

शनिवार साधना शिविर समाप्त

२३-३-५७ साधारण मनुष्यों के जिन्होंने इस पृथ्वी पर पुनः जन्म लेना होता है उनका जीव-आत्मा निकृष्ट

CamScanner से स्कैन किया गया

मध्यम उत्तम इन्द्रियों और स्थानों से निकलता है मरण समय और जिनके अधिक पुण्य कर्म यज्ञ दान आदि के होते हैं जिनकी संज्ञा पितृ बनती है उनका ईड़ा नाड़ी द्वारा कंठ स्थान से निकलता है उन्हें अपनी मृत्यु का भी ज्ञान हो जाता है वह कुछ नियत काल के लिए सुख भोग के लिए पितृ लोक में रहते हैं गंधर्व लोक में और धारणा ध्यान समाधि वाले जिनकी संप्रज्ञात समाधि तक पहुंच हुई होती है वे सूर्य लोक में। सूर्य नाड़ी पिंगला नाड़ी द्वारा उनका आज्ञा चक्र से जीवात्मा निकलता है। वह देव लोक में जाते हैं लाखों वर्ष तक सुख भोगते हैं उनकी पहुंच अहंकार तक पहुंची हुई होती है आत्म साक्षात नहीं किया होता जिनकी असम्प्रज्ञात समाधि होती है उनका जीवात्मा सुषुणा नाड़ी से ब्रह्मरध्र से निकलता है वह अपनी इच्छा से प्राण को छोड़ते हैं, यह मुक्त होते हैं।

२४-३-५७ शरीर की सब इन्द्रियां छिद्र द्वारा मैल निकालती हैं। ज्ञान इन्द्रियां ग्रहण तो करती हैं परन्तु देती कुछ नहीं। हाथ वैश्य के समान हवन करता है, बाणी दान करती है ब्राह्मण के समान। हवन में हाथ और बाणी का मुख्य काम होता है। हाथ पवित्र करता है शरीर और द्रव्य को, समस्त शरीर और इन्द्रियों

CamScanner से स्कैन किया गया

और पदार्थों की मैल हाथ शुद्ध करता है ऐसे हाथ से दी हुई आहुति मानव शरीर और द्रव्य को निरोग और तेजस्वी बनाती है। बाणी वेद के पवित्र मन्त्र बोलती है वेद ईश्वरी ज्ञान है इसलिए वह समझ कर बोलने वाली बुद्धि को पवित्र करती है, प्राण मन को पवित्र करता है यदि एकाग्रचित होकर (प्राणों की एकाग्रता) से आहुति दी जावे, तो मन पवित्र हो जाता है मन पवित्र बनेगा। जितनी-२ चेष्टाऐं काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार की उठती हैं, इसलिए जो याजक होता प्राणों की चेष्टाओं को रोक कर एक चित से आहुति देता है, उसको पवित्र मन मिलता है।

कुशा जल में, कुशायज्ञ शाला में, कुशा के आसन कुशा की पवित्री बना कर पहन कर याजक बैठे, तो बहुत लाभ है। कुशा में बह विद्युत है, जो प्राण को सूक्ष्म बनाने में सहायक होती है। यज्ञ की सब क्रियाओं में मौजूद रहे तो जैसे धातुओं को हाथ में या शरीर में पहनने से दिल पर प्रभाव होता है और वह सजातीय परमाणुओं को खेंचते और अपनी विद्युत बाहर निकालते रहते हैं, ऐसे कुशा उन परमाणुओं को खेंचती हैं जो अपवित्रता को दूर करने वाले परमाणु होते हैं।

२७-३-५७ अन्तर्ध्यानि अवस्था में जब आंखों की

CamScanner से स्कैन किया गया

दृष्टि मनः वृत्ति के साथ ऊपर अनन्त आकाश Glazing (सौंदर्य से ओत-प्रोत) में जा पहुंचती और टिकती है, तब समस्त मस्तिष्क में तेज भर जाता है, और वही मस्तिष्क से धाराएं बांध-बांध प्राप्त होता है प्रकट और प्रकाशित होता है जिससे दर्शन करने वालों पर शांति का प्रभाव पड़ता है (२) कान जब अन्दर से बन्द होते हैं और आकाशस्थ दृष्टि का साथ देते हैं, तब हृदय तक एक धारा बह जाती है जो गम्भीरता और सहनशीलता को उत्पन्न करती है (३) जब अन्दर से कंठ बन्द होकर उस आकाशस्थ दृष्टि का साथ देता है तब बाणी में गोडों से पांव तक ओज भर देता है तब स्पर्श शक्ति सुनने वालों पर और गोडों तथा पांव स्पर्श करने वालों पर छाप लग जाती है, यह सात्विक अवस्था की समाधि होती है। ज्ञान सहित शान्ति रस संयम, तेजसहन और ओज यह तीन शक्तियां ध्यानी को मिलती हैं। रजोगुणी समाधि में आंखें अन्तः दृष्टि से दृश्य कान अन्तः ज्ञान का श्रवण और अन्तः-बाणी कंठ अन्दर प्रभु स्मरण प्रार्थना आदि कर रही होती हैं, तमोगुणी समाधि में अपना और शरीर का कुछ ज्ञान भी नहीं रहता, जैसे सुषप्ति अवस्था में।

CamScanner से स्कैन किया गया

२९-३-५७ साधक की प्रवृत्ति कैसी होनी चाहिए ?

१) दृष्टि – जैसे चोर की दृष्टि धन पर पड़ी है पता नहीं उसे कैसे पता लग जाता है कि अमुक स्थान पर धन रखा हुआ है, उसे अंतः संस्कारों से प्रेरणा मिलती है चौबीस घंटे इसके संस्कार इसी खोज में घूमते रहते हैं। ऐसे ही साधक की प्रवृति हो उस के जन्म-जन्मान्तर के संस्कार उदय होने लग जायें। नाना साधनाओं की उपज अन्दर से मिलती है।

२) कर—हाथ, जैसे कंगाल पैसे को गांठ देता है, और बार-बार उसे हाथ लगाता है कहीं गिर तो नहीं पड़ी, कहीं गांठ खुल तो नहीं गई, कोई चुरा तो नहीं ले गया, इसीप्रकार साधक अपनी साधना की अनुभूति को गांठ बंधे रखे और बार-बार उसकी स्मृति करता रहे कहीं भूल तो नहीं गई मस्तिष्क से उतर तो नहीं गई किसी अहंकार अपमान स्वार्थ ने उसे चुरा तो नहीं लिया।

३) पेट-प्राण—जैसा भूखा अन्न को पाकर दानी दाता का बार-बार धन्यवाद करता है, ऐसे साधक किसी भी साधना से स्मृति तृप्ति और प्रसन्नता जब अनुभव करे, तब बार-बार उस प्रभु देव का या साधना के पथ प्रदर्शक गुरु देव का धन्यवाद बार-बार करे,

CamScanner से स्कैन किया गया

जिससे उसकी प्रीति अधिक-२ बढ़े आशीर्वाद धाराओं को ग्रहण करने में सामर्थवान हो सके।

प्रभु कृपा—यज्ञ पवीत वेदाम्भ संस्कार समय गुरु शिष्य से कहता है—'तेरे तीन गुरु हैं एक अग्नि दूसरा इन्द्र तीसरा आचार्य'। आचार्य कहता है 'मैं तुझे तीन प्रकार का उपदेश करूंगा ऋत् का सत्य का ब्रह्म का' तो कौन करायेगा ? तीनों गुरु अपनी-२ वस्तु का ज्ञान कराते हैं। अग्नि कराती है, ऋत् का आचार्य मनन कराता है सत्य का और इन्द्र कराता है ब्रह्म का।

गुरु केवल शब्द का ज्ञान करा सकता है, वस्तु का ज्ञान नहीं उदाहरण :—गुरु ने कहा मिट्टी का तेल, चम्मेली का फूल पुष्प उसके आकार रूप और गंध और काम का ज्ञान स्वयं वस्तु ने कर दिया। मिट्टी का तेल सामने आया दुर्गन्धसे ज्ञान हुआ कि यह मिट्टी का तेल है इसका काम जलना है। चमेली के पुष्प ने सुगन्धि का ज्ञान कराया, और दूसरे साधनों से स्वयं पहचान करादी और अपने काम को बताया। गुरु केवल शब्द से नाम बताता है।

मनुष्य आचार्य सत्य का उपदेश अपनी बाणी से करता है शब्दिक, परन्तु आचारण से सत्य का स्वरूप दिखा सकता है। यदि गुरु सत्यवादी नहीं है तो शिष्य

CamScanner से स्कैन किया गया

को केवल सत्य का शाब्दि ज्ञान रहेगा। सत्य के लिए जिस तप की आवश्यका है वह गुरु के आचरण से मालूम होगी, शब्द से नहीं और ब्रह्म का ज्ञान साक्षात केवल इन्द्र आचार्य अर्थात अन्तरात्मा ही करा सकती है, शब्द से ज्ञान साक्षात नहीं हो सकता।

३१-३-५७ मानव को सुख के लिए कपड़ा मकान रोटी आदि पदार्थ चाहियें। रोटी मनुष्य अपनी पाक-शाला में बनाता है, कपड़ा अपने कारखाने में बुनता है मकान के लिए ईंटे अपने भठ्ठा में पकाता है मगर उन की मूल सामग्री कपास, अन्न, मिट्टी सब प्रभु देव के कारखाना में बनती हैं यह सब पृथ्वी देवता उत्पन्न करती है। नोट, रुपया, अशर्फी सरकारी टक्साल कार-खाना में बनता है, मगर इस का मसाला सोना-चांदी और कागज का मसाला सब पृथ्वी देवता से उनके कारखाना में तैयार होता है। सूक्ष्म शरीर की कान्ति का सामान मसाला असल केवल प्रभुदेव के कारखाना से प्राप्त होता है, वह है समष्टि मन और महत्तत्व महत्तत्व से विज्ञान और मन से शिव संकल्प।

यज्ञ करते समय जब हम बार बार स्वाहा और सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना रख कर करते हैं तो हम अन्नमय कोष प्राणमय कोष के बल से कहते हैं।

CamScanner से स्कन किया गया

यह हमारी निर्मल भावनाएं परमाणुओं को आकाश में ले जाती हैं वहां एकत्रित होती रहती हैं, व्यर्थ नहीं जाती। जब कभी मनोमय विज्ञानमय कोष के बल से वह स्वाहा सर्वे भवन्तु सुखिनः की ध्वनि निकलेगी, यकदम वह बारूद के गोले की न्याइ (बाणी का बान) उन सब एकत्रित परमाणुओं को यकदम समष्टि मनः लोक में ले जा कर इस मन का सम्बन्ध जोड़ देगा। और याजक का मन शिव संकल्प वाला होकर उसे इस के दर्शन कराएगा तब इस मन में शिव प्रभु का ही संकल्प रहेगा।

१-४-५७ दो प्रकार की दैवी शक्ति या देवता हैं, एक तो प्रकृति से जैसे सूर्य का प्रकाश जल का रस पृथ्वी का गंध आदि मनुष्य को मिलते हैं स्थूल-शरीर और इन्द्रियों के लिए। दूसरे देवता या दैवी शक्ति, प्रभु की अपनी निज की है, जो मनुष्य के सूक्ष्म शरीर मन बुद्धि की सहायक है। उन देवताओं का नाम हैं :— वरुण, इन्द्र, मित्र, सरस्वती आदि। जैसे आंख का सम्बन्ध सूर्य के साथ जोड़ने से तत्काल सूर्य अपनी किरणों द्वारा प्रकाश देता है। यदि आँख पर मल आया हुआ हो, तो मल को धोकर फिर आंख देख

CamScanner से स्कैन किया गया

सकती है, ठीक इसी प्रकार हमारे अन्तःकरण और बाणी आदि का मल आवरण जब दूर हो जाता है तो उन का सम्बन्ध अपने देवता से जुड़ जाता है, सरस्वती देवता का काम है मति को विकास देकर बाणी में सरसता लाना यह सरसता सत् और रस वाली होती है, जो सब का हित करती है मति में पवित्रता लाती इस मन अन्तःकरण को शुद्ध करने वाले यज्ञ, तप और दान हैं। जब कठोरता का बाणी से त्याग हो जावे, और मन में तप और बुद्धि में यज्ञ की भावना पैदा हो जावे तब सरस्वती दैवी नृत्य करती हुई प्रवेश कर कर जाती है।

२-४-५७ गृहस्थ में प्रवेश करने वाले के लिए बड़ी जिम्मेवारी आ जाती है। इसे श्रेठतम कर्म कहते हैं। यज्ञ की वेदी के तीन घड़े कोनों वाले जिन पर नारियल रखा है, वह क्या बताते हैं, इस मनुष्य को सुख-शान्ति आनन्द चाहिए। सुख मिलेगा भौतिक-विज्ञान से शान्ति मिलेगी दैविक विज्ञान से व सूक्ष्म शरीर के ज्ञान से आनन्द मिलेगा आत्म परमात्म विज्ञान से। इस का सूचक ईशान कोने का रखा घड़ा जिस के अन्दर जल भरा है, शान्ति का संदेश देने वाला और ऊपर दीपक रखा है। जब आत्म ज्योति जगेगी तब

CamScanner से स्कैन किया गया

आनन्द शान्ति प्राप्त होगी, परम सुख, परम शान्ति, परम आनन्द, उसके लिए सदाचार की जरूरत है।

३-४-५७ गृहस्थी के लिए सदाचार (सत्याचरण) का क्या अर्थ है ? उत्तर—गृहस्थी को परिवार समाज जाति और देश की मर्यादा पालन करने, उसे स्थिर रखने और मर्यादा से परिवार समाज-जाति और देश का यश और गौरव बढ़ाने के लिए चार चीजों की सावधानी करनी पड़ती है। कहनी, बहनी, रहनी, सहनी (बोल चाल, बाणी का प्रयोग, उठने-बैठने की विधि, बड़ों-छोटों स्यान वालों और सभा घर बाहर में क्या करना चाहिए ?) रहना और सहना—घर में कैसे रहे, बाहर कैसे रहे, क्या-क्या सहन करे ?

४, ४, ५७ इन्दौर में श्री पं० वीर सैन जी ने कहा था, कि गायत्री का केवल भू लोक से सम्बन्ध है, आज प्रभु कृपा से उस का अन्तः समाधान हुआ।

गायत्री का सम्बन्ध सब लोकों के साथ सब प्रकार की सृष्टि के साथ अर्थात हिरण्यगर्भ ब्राह्मी सृष्टि और विराट स्वरूप सृष्टि से है। अथर्ववेद के कांड १५ सू० ६१ म० १० में जो इस का माहात्म्म गाया गया है वह इस लोक और परलोक दोनों के लिए है ब्रजत ब्रह्मलोकम्.....

CamScanner से स्कैन किया गया

२) यह मन्त्र सब लोकों का वर्णन करता है। गायत्री के शब्दों में उन लोकों का तात्पर्य निहित है, जैसे भूः भुवः स्वः तो प्रसिद्ध है ही तत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धी महि धियो यो नः प्रचोदयात् के शब्द वरुण से (महः) सवितः (जनः) भर्गः से (तपः) और तत् से (सत्यं)।

३) यह मन्त्र अनादि काल से है, और जीव और परमात्मा का गुरु शिष्य का सम्बन्ध भी इसी मन्त्र से होता है।

४) इस मन्त्र को वेद मुख कहते हैं और यही वेद और यही वेद ज्ञान ऋक् यजुः साम अथर्व, न केवल भूः लोक पर है, अपितु सर्व लोक लोकांतरों में यही वेद ज्ञान एक जैसा है, और इन्हीं शब्दार्थों में है।

८-४-५७ सब मनुष्यों की रक्षा और फल भोग सुख दुःख उनके पूर्व कर्मानुसार ही मिलता है। वह सब कर्म शरीर और मन इन्द्रियों से किये होते हैं। उन सबका सम्बन्ध स्थूल व सूक्ष्म प्रकृति से है, परन्तु जो आत्मा का कर्म है, वह सब से श्रेष्ठ कर्म है। जब सत्या चरण भाव से मनुष्य प्रभु शरण अर्पण हो जाता है, तत्काल उसका अज्ञान अविद्या जो पाप का बीज है, नष्ट हो जाता है और विद्या का प्रकाश हो जाता है

CamScanner से स्कैन किया गया

तब जिसने भी कर्म शरीर इन्द्रियों मन संबंधी भोग के होते हैं वह आत्मा के बलवान हो जाने पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते, उनका प्रभाव ऐसे होता है जैसे एक करोड़पति की पैसा आना की हानि हो जावे, तो उसे प्रतीत नहीं होती, ऐसे उस आत्म-ज्ञानी आत्म समर्पित को दुःख सुख कुछ प्रभाव नहीं करता। समर्पित अपनी इच्छा से रहित हो जाता है, वह भगवत इच्छा के अर्पण होता है।

भगवत इच्छा कल्याणकारी और मंगल (कर्त्री) विधाता होती है। पांच प्रकार की भक्तिके पांच प्रकारके फलः—

१) आत्म समर्पण, आत्म शक्ति·····फल मोक्ष। यजुर्वेद का अध्याय ४० मन्त्र अंतिम सिद्ध करता है····· हिरण्यमयेन पात्रेण:·····।

२) मनः भक्ति का फल ऋषि मुनि बनना, अध्याय ४० का मन्त्र १६ सिद्ध करता है अग्नेनय सुपथाराय—

३) बोद्धिक भक्ति का फल है, नेता या राजा बनना।

४) इन्द्रिय भक्ति का फल है, धर्मात्मा, विद्वान, मुमुक्षु बनना।

५) तनः भक्ति का फल है, मनुष्य का जन्म, गरीब, साहूकार आदि अपने कर्म अनुसार।

९-४-५७ कर्मकांड क्या है ? शास्त्रलोक विधि

CamScanner से स्कैन किया गया

विधान से कर्मकांड एक छोटा सा नमूना है अल्प जीव के समझाने के लिए। जो इस नमूना को समझ कर सदा स्मरण में रखता हुआ जीवन यात्रा में इस का विकास करताहै और जीवन सफल करे उदाहरण देखो २-४-५७ का लेख।

Barbitnes (बार बिटनैस, अमेरिका में एक वर्ष में ३०० टन एक दवाई तैयार होती हैं, जो लोगों के मस्तिष्क को शांत करने के लिये देते हैं, उनके दिमाग इतने अशांत हैं, निद्रा नहीं आती, और भी कई औष-धियां निकाली हैं, उस काम के लिए, परन्तु भारत में बिना पैसे के कितना सुगम शास्त्रोक्क मर्यादा पालन करते रहने से इन रोगों से मनुष्य बचा रहता था। मस्तिष्क को झुकाना नमस्कार करना, अपने देवों, देव स्थानों, देव पुस्तकों में श्रद्धा भक्ति भाव से उन का आदर सत्कार करता ! प्रतिदिन माता-पिता गुरु साधु संत महात्माओं के चरणों में मस्तिष्क झुकाना। उनकी आशीर्वाद कितनी शांति देने वाली होती है, जैसे मनु भगवान ने कहा :— अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धो-पसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो-बलम् ॥ मनु ॥ (श्री ऋषिकेश के द्वारा)

CamScanner से स्कैन किया गया

१२-४-५७ यज्ञ में (यज्ञ अग्नि में दृष्टि रखे रहने से स्वपन में भी और आंख मूंदे ध्यान में भी यज्ञ अग्नि दिखाई देती है, और वह सात्विक परमाणु स्वप्न में भी मन पर प्रभाव डाल जाते हैं। जैसे बुरा स्वप्न भयानक स्वप्न आने पर मनुष्य डर जाता है, और बहुत देर तक उसके दिल व दिमाग पर उस तमोणुणी परमाणु का प्रभाव रह जाता है, ऐसे ही सत्य-कर्मों का प्रभाव होता है। यह प्रभाव प्राणमय कोष पर होता है। अच्छे स्वप्नों से प्राणमय कोष की शुद्धि होती है।

१३-४-५७ समस्त गुणों को आकर्षण करने वाला एक ही गुण सत्य है,। जितना-२ सत्य हृदय में होगा, उतना पाप अंधकार अज्ञान बुराई का अभाव हो जावेगा। जैसे सूर्य का प्रकाश जिस स्थान पर होगा, वहां का अंधेरा भाग जाएगा। समस्त अवगुणों का आकर्षण अहंकार है, जितना अहंकार बढ़ेगा, उतने अवगुण दुर्गण मस्तिष्क में खिचे चले आवेंगे।

१४-४-५७ प्रातः ४-३० बजे श्री इन्द्रसैन जी शांति देवी अपने सुपुत्र धर्म भूषण और नई वधु सुरेन्द्र कुमारी सहित डोली लेकर आशीर्वाद के लिए आये। महा-पुरुषों की ओर से प्रार्थना समय एक शब्द आया था,

CamScanner से स्कैन किया गया

सत्यौजा=जो श्रद्धा, सत्य से उत्पन्न हुई हो, अर्थात सच्चे हृदय से आशीर्वाद लेने की श्रद्धा, जैसे भाव उन के माता-पिता में हैं। तब वह आशीर्वाद जीवन भर में Lift (उत्थान) का काम करती हैं। आशीर्वाद, बधाई और थोड़ा सा उपदेश गृहस्थ जीवन के लिए करके जीवन यज्ञ पुस्तक उन के पल्लू में दी गई।

१५-४-५७ घुटने टेक हृदय में श्रद्धा भाव से मस्तिष्क को पूज्य देवों के, माता-पिता गुरु के चरणों में नमस्कार करने से अपने आप में क्या उत्पन्न होता है, और आशीर्वाद से क्या मिलता है ?

आशीर्वाद से तो मनु भगवान के कथन अनुसार आयु विद्या यश और बल मिलता है, परन्तु अपने आप में घुटने टेकने से ओज और मस्तिष्क टेकने से तेज और हार्दिक श्रद्धा से सहन शक्ति मिलती है। जिन महा पुरुषों देवों ने अपनी ज्ञान अमृत रस से बाणी का ओज प्राप्त किया है, उन के सामने घुटने टेकने से ओज जिन्होंने तप से तेज प्राप्त किया है, उनको मस्तिष्क टेकने से तेज मिलता है, और जिन्होंने भक्ति श्रद्धा से भक्ति को प्राप्त किया है, उन से सहनशक्ति मिलती है। मगर अपने माता-पिता गुरु से चाहे उन्होंने कुछ भी प्राप्त नहीं किया। यदि सच्चे हृदय से भक्ति भाव

CamScanner से स्कैन किया गया

से घुटने टेक नमस्कार माथा टेक कर किया है, चरण स्पर्श करके तो पुजारी अन्दर से स्वयं यह चीजें उत्पन्न होंगी, वह परमात्मा देता है, उस देवत्व भाग के बदल में अपने निज गुणों से, क्योंकि अन्य साधु संत को तो जान कर गुण देख कर माथा टेकना होता है, और माता-पिता, गुरु का सम्बन्ध परमेश्वर ने पूर्व कर्मानुसार स्वयं जोड़ा होता है, वह कर्तव्य कर्म भक्ति है।

१५-४-५७ यजुर्वेद ३०४ म० ३२ घरों में पित्रों से प्रश्न और उनके क्या उत्तर हों।

१. हे पूजनीय पित्रों। हमें जीवन रस का उपदेश करो प्रभु भक्ति से आत्मिक रस ब्रह्मानन्द रस प्राप्त होता है २. जो पाप से दुःख होता है। हमारे अहंकार के समर्पण से रस आएगा हमारे शारीरिक और आत्मिक जीवन का शोषण, है उनके उपाय ? पाप से दुःख होते हैं पाप इन्द्रियों के संयमत न होने से होते हैं इन्द्रिय संयम और स्वार्थ के त्याग से दुःख और पाप का नाश होगा, लोभ के कारण से स्वार्थ होता है ३. जीवन का आजीवन कैसे हो ? सत् से कमाई सत् का व्यवहार करने से आजीविका सुखदाई होती है। काम के कारण मनुष्य अस्तेय का मान नहीं कर सकता। ४. दान पृथ्वी और राज्य कब सुखदाई हो सकता है

CamScanner से स्कैन किया गया

जब न्याय से खर्च किया जावे। राजा के प्रति कर में न्याय और पृथ्वी की प्रजा के लिए सब को अधिकार के अनुसार भाग देना, न्याय करना, अपने से परिवार से, समाज से, दीन दुःखी गरीबों से न्याय करना, यह तब होगा जब मोह का त्याग होगा, मोह को प्रेम में बदल देना होगा।

५. हमारा क्रोध कैसे छूटे ? द्वेष बदला लेने की भावना जो हमें दुःखदाई होती है,उसका उपाय क्रोध को मृत्यु में बदल देना चाहिए। मन्यु ही दीन दुःखियों अन्याय की रक्षा कर सकता है। मन्यु के लिए ज्ञान धर्म का वास्तविक स्वरूप दर्शाये, प्राप्त करना चाहिए।

६. संयम और भ्रम से जो दुःख होता है, और पाप होते हैं, विश्वास और प्रेम टूट जाता है, उसका उपाय बताओ। उसका उपाय है, विद्वान आप्त पुरुषों की सेवा और संग।

७. पितरो में श्रद्धा भक्ति और उनके लिए त्याग कुर्बानी। अपने सुख का त्याग करके उनके सुख की लालसा करो। घरों में पित्तरों को बुलाओ, और टिकाओ, उनसे अपनी कमाई, सेवा स्वीकार कराओ उनसे विद्या और शिक्षा लो। जीवन के सौन्दर्य के

CamScanner से स्कैन किया गया

लिए शिक्षा और पाप से बचने के लिए विद्या को ग्रहण करो।

२१, ४, ५७ जो घटनाएं अकस्मात अकारण मनुष्य के साथ घट जाती हैं, जिस से शारीरिक मानसिक या आर्थिक कष्ट होता है, यदि वह कष्ट कष्टदायक रहे, तो पूर्व जन्म का फल भोग होता है। यदि बिना ज्ञान एक कष्ट आए, और दुःख सहते मालूम करते हुए भी वह दुःख सुख परिवर्तित हो जाये, तो समझना चाहिए कि जन्म जन्मान्तर के पाप कट गए। ऐसे ही अकारण प्रसन्नता और लाभ में समझना चाहिए। कभी कभी संत महात्माओं के अकारण विरोध और हान अपमान हो जाया करता है, वह उस की परवाह नहीं करते बल्कि प्रभु इच्छा समझते हैं तो उनके भी जन्म जन्मांतर के पाप समाप्त हो जाते हैं।

२२,४,५७ स्वप्न ! पूज्य श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज के दर्शन हुए। महाराज आसन पर विराजमान हैं, और मैं चरणों में बैठा हूं। मैं नमस्कार भी आदर से करता जाता हूं, और गुस्ताखी की बात भी करता जाता हूं कि महाराज मुझे प्रभु कृपा से अपने महाराज से वह प्राप्त हुआ है, कि मैं प्रभु साक्षात का मार्ग निवेदन कर सकता हूं, कि जैसे कोई कहता है,

CamScanner से स्कैन किया गया

देखो यह ''है। महाराज तो बेशक विद्या के सागर हैं, महान् विद्वान हैं मगर शब्द विद्या के महान विद्वान हैं, और जाग हो गई हैरान रहा मैं किसे और यह क्या कह रहा था।

फिर निंद्रा आ गई, किसी से कह रहा हूं कि शब्द की जहां समाप्ति होती है, अर्थ में—फिर केवल अर्थ ही सन्मुख रह जाता है और अर्थ भी जहां समाप्त हो जाता है वहां केवल प्रतीत मात्र रह जाती है और प्रतीति के अतिरिक्त और कुछ किसी का मान नहीं होता, वही साक्षात है।

(जब भजन के लिए उठा, और बैठा तो बहुत आश्चर्य करने लगा विचार करने लगा, यह स्वप्न मतलब के लिए आया होगा, उनको गुरुदेव समझता हूं। यह कैसा संस्कार होगा, या कोई विशेष मतलब होगा। २. मनुष्य जिस क्षण अपनी अज्ञानता और मूढ़ता को भूल जाता है, उसी समय वह शेखी बघारता और अभिमान से सब कुछ जानने का अधिकार बताने लग जाता है। यही भूल मनुष्य का सत्यानाश करती है, हठी और दुराग्रहि मूर्ख बन जाता है।

२४-४-५७ दृश्य, कल का स्वप्न ! मनुष्य अपने नाम को तो नहीं छोड़ता परन्तु नाम वाले काम को

CamScanner से स्कैन किया गया

छोड़ देता है। मनुष्य अपनी जात का तो अभिमान करता है, परन्तु अपनी ज़ात की बात वर्णन नहीं करता एक उच्च कुल की देवी व्याकुल होकर दूसरी कर्मशील विदूषी देवी के साथ आई, और धर्म मार्ग में पति को रुकावट कहने लगी। मैंने कहा, माता यदि सच्चे हृदय से अपना कल्याण चाहती है तो पति देव से यूं कहो। परमेश्वर ने हमें मनुष्य जन्म दिया और फिर ऐसी जाति में, जो कहलाती है, हमारा नाम तो गुएं वाला है। गद्दी मिली हुई है, हम अपनी ज़ात और अपना काम तो वही बतलाते हैं, परन्तु न काम वह करते हैं, कि लोगों का सुधार कर सकें। न वह बात करते हैं, जो हमारी ज़ात को समझे, फिर परमेश्वर और पूर्वज क्या कहेंगे कि पूर्वजों के नाम को गिरा रहे हैं, और परमेश्वर की दृष्टि में भी पापी बन रहे हैं, या तो नाम और जात का त्याग करें या काम और बात को अपनाएं। यदि हम संसार का सुधार, अपने सेवकों का सुधार नहीं कर सकते, तो अपना सुधार तो करलें। धन दौलत के कमाने में रहे और जीवन व्यर्थ गया, और अपने पूर्वजों का नाम लेने वाला भी कोई न रहा तो हमारा नाम कौन लेगा? देवियों में दिव्य गुण, तप और नम्रता या त्याग का स्वभाविक है, इसी से

CamScanner से स्कैन किया गया

वह सब का सुधार संवार कर लेती हैं। कहीं तप से, कहीं नम्रता से, कहीं त्याग से।

दान और देन दा···न, दे···न, दान वह हैं जो देखने में न्यून हो जाता है, और अन्त में बढ़ता है जैसे किसी के पास १०० रु० है, ५ दान कर दिया उस के पास ९५ रु. रह गए परलोक में बढ़ेंगे। मन भर दान से ५ सेर भूमि में बो दिये, तो शेष ३५ सेर रह गए, फिर अन्त में बढ़ेंगे, सैंकड़ों होकर। मगर देन वह होती है। जो न आरम्भ में घटती है न अन्त में वह सदा बढ़ती ही रहती है। देन प्रभु की होती है, वह देवत्व भाग में मिलती है। वह किसी को दी नहीं जाती, सुनाई जाती है। इसका देना केवल धारा सम्बन्ध का जोड़ना होता है।

२६, ४, ५७ अर्थ तो कर्म से पैदा होता है, और धर्म का ज्ञान उत्पन करता है। अर्थ और कर्म का सम्बन्ध लोक व्यवहार से है। धर्म और ज्ञान का सम्बन्ध व्यक्तित्व से है। ज्ञान से उपजा धर्म बुद्धि को पवित्र करता है, और कर्मसे उपजा अर्थ मन को पवित्र करता है। कर्म यदि सत्कर्म है तो अर्थ भी शुद्ध और मन भी पवित्र। ज्ञान यद्यपि सद् ज्ञान है, तो धर्म और बुद्धि भी सद्बुद्धि होगी। इन सबका दारोमदार काम

CamScanner से स्कैन किया गया

पर है, जैसी कामना होगी वैसा ही कर्म और धर्म होगा, वैसा ही अर्थ और ज्ञान होगा। इस कामना को केवल प्रभु उपासना साधना ही पवित्र कर सकती हैं। लोक व्यवहार में बुद्धि से अर्थ कमाया जाता है, और मन से धर्म कमाया जाता है। जैसी बुद्धि और मन होगा वैसा अर्थ और धर्म और मनुष्य की जाँच-विचार होगी।

प्रत्येक जीव का भोग निश्चित है। भोग विषयों और पदार्थों से लिया जाता है, इस लिए हर एक इन्द्रिय का भोग भी निश्चित हैं। जब भोग की समाप्ति होती है तो उस इन्द्रिय की शक्ति खत्म हो जाती है।

२७, ४, ५७ भक्ति देश भक्ति (१) देश के लिए अपना तन कुर्बान करना (२) अपना धन और प्राण कुर्बान करना (३) देश की हानि और देश के लाभ के लिए अपनी हानि और अपना लाभ समझना। देश के मान अपमान में अपनी हानि में देश की हानि और अपने लाभ में देश का लाभ समझना। उत्तरोतर भक्ति है पितृ भक्ति, नमस्कार करने हर्ष से, नमस्कार की चाह लगी रहनी। १०/१००

२) तन मन धन से सेवा करनी १०/१००

CamScanner से स्कैन किया गया

३) आज्ञा पालन करना ५०/१००

४) पितरों की वंश और नाम धनको बढ़ाना२०/१००

५) समर्पण करना १००/१०० भक्ति

गुरु-भक्ति १) नमस्कार में श्रद्धा भक्ति १०/१०० (२) तन सेवा २०/१०० भक्ति (३) आज्ञाओं का पालन करना बिना ननच ५०/१०० मनः भक्ति। (४) गुरु मिशन और नाम को गुरु के ज्ञान उपदेश द्वारा बिना अपने नाम की कामना को बढ़ाना ७०/१०० भक्ति (५) और अपना समर्पण करना १००/१०० भक्ति प्रभु भक्ति इस की पांच प्रकार की पहले उग चुकी है।

श्रीमन्त परमहंस परिव्रजाक आत्मभाषणाँ श्रीमंत व्रजा नन्द सरस्वती स्वामी वा विरचित अमुक पुस्तक था आर्य अविनय.....

माता पिता तो सब के सब अपनी संतान का अपने से बढ़ाना चाहते हैं और मांगते हैं। क्योंकि संतान अपने माता पिता के नाम ओंर काम और सम्पति को बढ़ाती है, मगर ऐसे गुरु शिष्य बिरले होते हैं एक गुरु सैंकड़ों हजारों शिष्य होते हैं, मगर शरणगए कोई बिरला ही होता है, उदाहरण सिखों के दस गुरुओं को है या शंकराचार्य के मत में है।

CamScanner से स्कैन किया गया

६, ५, ५७ कल रात श्री आचार्य जी ने पुस्तक स्वाध्याय संहिता से प्रजा पति और कश्यप का संवाद सुनाया। प्रजा पति से प्रश्न हुआ, संसार में सबसे सर्व श्रेष्ठ क्या है ? तो प्रजा पति ने कहा, सत्य श्रेष्ठ है फिर दम सर्व श्रेष्ठ है, शम सर्व श्रेष्ठ है, फिर दान सर्व श्रेष्ठ है, फिर कहा तप सर्वश्रेष्ठ है, फिर कहा श्रद्धा श्रेष्ठ है, फिर आचरण सर्वश्रेष्ठ है फिर कहा धर्म सर्व-श्रेष्ठ है, फिर कहा प्रसन्न (संतान उत्पत्ति पितृ ऋण से अऋण होना) सर्वश्रेष्ठ है, और फिर कहा कि अग्निहोत्र सर्वश्रेष्ठ है।

मन में विचार और प्रश्न उठा यह सब कैसे सर्व-श्रेष्ठ हो सकते हैं, सब से श्रेष्ठ तो एक वस्तु हो सकती है।

उत्तर और समाधान प्रभु कृपा से मिला संसार में साध्य और साधन या वस्तुएं हैं, बिना साधन के साध्य की सिद्धी या प्राप्ति नहीं होती और साध्य और साधन तीन प्रकार के हैं। आध्यात्मिक अधिदैविक अधि-भौतिक·····व्यक्ति के लिए आत्मिक मानसिक और शारीरिक, मनुष्य को तीन प्रकार से उन्नति करनी है, इसलिए प्रजापति ने तीनों का साध्य और साधन बता दिया।

CamScanner से स्कैन किया गया

साधन	आध्यात्मिक	दैविक	भौतिकशारीरिक
परमेश्वर की प्राप्ति केलिए	सत्य	दमशम	दान
आत्मा की प्राप्ति के लिए	तप	श्रद्धा	आचरण
ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए	धर्म	अग्निहोत्र	प्रजनन

प्रजापति ने सागर को गागर में बन्द कर दिया, यह निचोड़ बताया, इस से अतिरिक्त कोई भी साधन नहीं है, शेष जो साधन हैं वह उपसाधन हैं। इन साधनों की प्राप्ति या इन के योग्य बनने के लिए हैं।

२ परमेश्वर की आशीर्वाद मिलाप और सुख के कौन-कौन अधिकारी हैं ? पुरः सदः वीराः अनवद्यः पतिजुष्टेव नारी तीन व्यक्ति निचले दर्जा का पुरः सदः अर्थात जो जन ईश्वर अभिमुख ही है।

दूसरे दर्जा के — वीराः जैसे पुत्र लोग अपने पिता के घर में आनन्द पूर्वक निवास करते हैं, ऐसे परमात्मा के भक्त हैं।

उत्तम दर्जा के — अनवद्या पति जुष्टेव वारी अति उत्तम गुण युक्त पति की सेवा में तत्पर पतिव्रता नारी जो रात-दिन तन मन धन से अत्यन्त प्रीति युक्त हो के अनुकूल ही रहती है। ऐसे जो भक्त प्रेम प्रीति युक्त हो के भक्ति करता है, वह आर्य भविनय मन्त्र

CamScanner से स्कैन किया गया

हैं। विनम्र, विनीत, स्वभाव वाले होते हैं कर्म योगी वीराः ज्ञान प्रभु के पुत्र—संसारी ऐश्वर्य से उप राम ज्ञान योगी।

नारी—पतिव्रता के समान अर्पित ध्यान योगी भक्त जो ज्ञान और ऐश्वर्य प्रभु की सब विभूतियां की प्राप्ति के लिए सर्व संसार में प्रेम भाव से अपने ऐश्वर्य देवी व आसुरी का विवरण करते हैं।

७-५-५७ साधक उपासक का कभी भजन जप में मन ऐसा लगता है कि उसे बड़ा आनन्द आने लगता है, छोड़ने को जी नहीं करता और कभी शांत-शांत अवस्था रहती है। आनन्द और शाँत अवस्था में भेद क्या है ? जब साधक का किसी विषय में मन की एकाग्रता हो जाती है तो उसे आनन्द आने लगता है, चाहे वह विषय संसारिक या आत्मिक। एक बार जमां मन लग जाता है, जितनी देर वह लगा रहता है, और कोई वृति मन में नहीं उपजती, तब तक खूब आनन्द आता रहता है। कभी-२ ऐसे विश्वास में एकाग्रता हो जाती है। जिस की अनुभूति बढ़ती ही जाती है, तब छोड़ने को जी नहीं चाहता।

शांत अवस्था तब होती है, जब वृतियों का अभाव हो जाता है। जितनी देर तक कोई वृति नहीं उपजती

CamScanner से स्कैन किया गया

सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी वृति का अभाव ही भ्रांत अवस्था का अनुभव करता है।

२) किसी व्यक्ति के गुण कर्म स्वभाव को जानना चाहते हो तो उस से प्रीति करो, और उस से सचाई से घुल मिल जाओ, उस के पास सब विचारों को छोड़-कर उसी के लिए बैठो, उसी के पास बैठो।

यदि किसी विषय या वस्तु का गुण कर्म स्वभाव देखना चाहते हो तो उस का खूब प्रयोग करो, तब जो प्रभाव आप पर पड़े, उस का ज्ञान आप को हो जावे या ऐसे ही परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव को जानने के लिए उसी परमेश्वर से प्रीति और सत्याचरण करना पड़ेगा। परमेश्वर के किसी काम को देखें, तो प्रीति और सचाई से देखें, तब उसका काम प्रभु के गुण कर्म स्वभाव को प्रकट करेगा।

३) मनुष्य जो काम स्वभाव से करता है, उसे प्रसन्नता और रंज याददाश्त स्मृति नहीं रहती, और जब मर्यादा से या अभ्यास के लिए करता है उसकी स्मृति आ जाती है, एक मनुष्य सेवा, दान, उपकार आदि कोई अच्छा काम करता है, अगर उसके बाद उस का मन अपने आप उसे दुहरा-२ कर प्रसन्न होता है। और उसका कालपिजक मन में विस्तार करने लग

CamScanner से स्कैन किया गया

जाता है, तो समझो कि अभी उस में लोकैषणा वह शुभ कार्य करा रही है।

मनुष्य जब जागृत में काम करता है, तो अन्नमय कोष स्थूल शरीर से करता है, और जब स्वप्न में कार्य करता है, तो उस का सूक्ष्म शरीर मनोमय कोष के द्वारा काम करता है। जब शांत चित होता है, तब मनोमय कोष में होता है। जब एकाग्रता का आनन्द लेता है तो विज्ञानमय कोष में काम करता है। जब गहरी निन्द्रा सोता है (तुरया अवस्था) है या असप्रज्ञात समाधि होती है, तब आनन्दमय कोष में काम करता है वृतियों के अभाव में जो आनन्द या शांति होती है, वह आनन्दमय कोष में, और जब एकाग्रता किसी विषय पर होती है, तब विज्ञानमय कोष में।

११-५-५७ प्रातः जाग कर प्रार्थना करके, शोच दातन से निवृत होकर अपने भजन स्थान में बैठा, लगभग ४ बजे का समय था। प्रथम यथा पूर्व, प्रार्थना—अद्या, देवाः अदितः सूर्यस्थ····· ६ मन्त्र पढ़ कर दिनेश करुणेश भगवान महिमा महान, करुणा निधान सर्व-शक्तिमान मेरे प्रभु देव, मेरे प्रभु देव, वह प्रभु देव जिसका मैं आश्रित हूं, जिसने आपने अपने गजंखाना से अपनी अपार दया और तर्स करके यह नाम बख्शा

CamScanner से स्कैन किया गया

(नमस्कार करके) तेरी दया बे अन्त है, शुक्र है, बहुत-बहुत शुक्र है अनगिणत बार-बार शुक्रिया करती हूं कि आज रात खैर से गुजरी शेष रात और चढ़दा दिन और आने वाली रात भी खैर से गुजारे दे नेकी साथ गुजारनी। सब देवी देवता जो इन इन्द्रियों अधिष्ठात्री देव है, जिन के आप महादेव है, कृपा करके इन्हें प्रेरणा कीजिए, कि वह अपनी-अपनी इन्द्री से कोई भी अप-यश और उपद्रव न होने देवें। सब देवी देवता और दिन रात कल्याण कारी हूं ओ३म शम, इसके बाद गायत्री मन्त्र में कहते सप्त व्याहृति, ओ३म् भूः ओ३म् भुवः ओ३म् स्वः, ओ३म् महा ओ३म् जनः ओ३म् तपः ओ२म् सत्यम् का मन्त्र अभी उच्चारण ही किया इसके बाद गायत्री मन्त्र सवितुर्वेरण्यम् से बोलना था, कि बोलने से पहले ही समाधिस्त अवस्था हो गई, और मैं भूर्भुवः स्वः लिखने लगा। कि मुझसे सुलेख न लिखा गया। मैं कह रहा हूं। मुझ से तो अच्छा वही लिखा जाता, सुलेख नहीं है, तो फिर क्या देखता हूं, कि हृदय के ऊपर भूर्भुवः स्वः इतने सुलेख से एक-एक अक्षर ना मालूम कितनी देर लग जाती होगी लिखते-लिखते लिखने वाले को फिर तत् सवितुर्वरेण्यम् त्रिकुटि के स्थान पर बड़ी सफाई से एक-एक अक्षर बहुत देर तक

CamScanner से स्कैन किया गया

लिखा जाता रहा, फिर भर्गो देवस्य: धी महि के लिए हृदय में चुप हो गई। बहुत देर के बाद लिखे जाने पर धियो यो नः प्रचोदयात् फिर त्रिकुटी में आई। उसी प्रकार से बड़ी सफाई से और देर लग गई। और फिर भर्गो देवस्य धी महि हृदय में लिखा गया। फिर मन्त्र छूट गया, और बिल्कुल निरोध अवस्था हो गई, फिर आवाज आने लगी।

नव-जीवन निर्माण जगत (में) कल्याण, जगत कर भान। जगत होंठो की लाली, हो जाए कुर्बान-जगत कर भान। गद्दी पर गुरु देव ब्राजे टेक मथा प्रणाम। महापुरुष बैठे हुये थे, उसी स्थान गद्दी पर मैंने मथा टेका प्रेम संग मन धन तन (धन्य-धन्य) पहुंच गए गुरु ग्राम (धाम) फिर इसे दुहराया, और इसके बाद सुन अवस्था हो हो गई। आवाज आई। हाथ जकड़ गए, पांव सुन गर्दन किल अकडाई।

स्थल दर्द ली सुर्त प्राण कोष समाई ॥

बहुत काफी देर बाद शरीर का आसन ढीला हुआ और फिर प्रार्थना उपासना करके नमस्कार करके आंख खोली तो पौने छः बजे थे।

१२-५-५७—यजुर्वेद मन्त्र ५४ अध्याय ३ आनएतु मनः पुनः। क्रत्वे दक्षाय जीवज्ञं ज्योक् च सूर्य दृशे ॥

CamScanner से स्कैन किया गया

मनुष्य जन्म का मिलना उपासना से ।

१३-३-५७– सोमवार उत्तर काशी पूर्णमासी चांदग्रहण

मनुष्य का माथा, ललाट एक प्रकार की तखती है जिस पर लिखा जाता है । कईयों का माथा बड़ा चमकता तेजस्वी होता है, कईयों का निस्तेज । मनुष्य के भाग्य दुर्भाग्य की यह तख़्ती है । मनुष्य जब किसी महा आत्मा के पास जाता है, तो उस का सिर यह माथा और हाथ दोनों उसके चरणों में स्पर्श करते हैं। हाथ भाग्य के बीतने वाला (बीज बोने वाला) अथवा बिखेरने वाला काला और श्वेत करने वाला है, और माथा की तख्ती वह काला और श्वेत या फल लिखा जाता है । दोनों पवित्र होने के लिए पवित्र आत्माओं के चरणों में झुकते और स्पर्श करते हैं । चरणों में क्यों झुकते हैं ? निराभिमान होने के लिए ।

१६-२-५७–मकान बनाने के लिए नींव खोदनी पड़ती है । जितनी बुनयाद होती है, उतना मकान दृढ़ बनता है । मगर बीज जो भूमि में बोया जाता है, वह बीज अपनी जड़ों द्वारा स्वयं अपनी नींव नीचे खोदता फैलाता जाता है, जैसी बीज में सार्मथ्य होती है । ऐसे ही आध्यात्मिक मार्ग में श्रद्धा बीज है । हृदय की भूमि में धारण किया जाता है भूमि जितनी आर्द्र होगी,

CamScanner से स्कैन किया गया

उतना बीज अपनी जड़ें गहरी ले जावेगा। नम्रता इस की जड़ें हैं। कठोर भूमि (हृदय) में श्रद्धा गेहूं छोले के बीज के समान होती है, अगर हो भी।

२) तप और प्रायश्चित से किए पाप के फल दूर होते हैं। भूख, प्यास सर्दी-गर्मी शरीर प्राण को लगती हैं और भोग भी यही भोगते हैं। भोगने में जब इनका भोग बन्द कर दिया गया तो जो दंड शरीर प्राण को मिलना था, वह अपने आप भुगत गया। और जिस मन चित से पाप के संस्कार उठते थे पश्चाताप से उन के संस्कार दग्ध हो गये। जब संस्कार न रहे, तो आगे को पाप की वृति न जगेगी, न पाप होगा इस लिए कहा कि तप सब किल्विष का नाश करता है।

२०-५-५७— चेतावनी स्वप्न : मैं बाज़ार से गुजर रहा हू। बाज़ार बन्द है। कहीं-कहीं दुकान पर एक-२ व्यक्ति निक्कमा मुफ्त खोर भिखारी बैठा हुआ है। मैं रोटी खाने जा रहा हूं एक व्यक्ति मेरे पीछे लग गया, मैंने उसे कहा बाबा जाओ। मेरे पीछे क्यों आते हो अपना जाओ काम करो। तब भी वह मेरे पीछे चला आया, मैंने उसे कुछ कठोर होकर बोला, वह वापस चला गया आगे मुझे एक और व्यक्ति मिला। उससे मैंने कहा आप का जलसा हो रहा है क्या लंगर का

CamScanner से स्कैन किया गया

प्रबन्ध नहीं है ? कहा है। मैंने कहा, इन गरीबों को ले जाइये, उनको भी रोटी खिलाइये।

मेरी निद्रा खुल गई तब विचारने लगा यह क्या हो गया ? समझ न आई। जब सैर पर गया तो सूझा कि बस यही दीन दरिद्र दुखियों का पालन करना है, सत्कार करना है तुम्हें तो आदेश था। अरिवदत् च नमः प्रस्विदे। तुम्हारा कर्तव्य था कि भूखा था चाहे तेन जमा वह आलसी निक्कम्मा था, उसे रोटी चाहिये थी। इसलिए तुम्हारे पीछे आ रहा था, तो तुम उस को ले आते, अपनी आधी रोटी दे देते, आधी तुम खाते यदि तीन हो जाते, तो तिहाई-२ कर देते लोग बहुत व्यक्ति आ जाते, तो अपनी सारी रोटी दे देते, और उनको कहते, बांट लो, चाहे एक भिखारी हो, तुम न खाते। तब तो यह तप और प्रेम था, तुम्हारा पितृ यज्ञ तो यह है कि अपने परम पिता परमात्मा की उस की प्रजा की सेवा करना, मुझे फिर बड़ी लज्जा आई कि फेल हो गया।

२२-५-५७—जब मनुष्य में सहन-शक्ति नही होती तो शरीर इन्द्रिय मन और आत्मा का ह्रास हो जाता है। जब शरीर सहन नहीं करता, तो शरीर से वीर्य नाश और जब किसी इन्द्रिय में सहन नहीं रहता, तो

CamScanner से स्कैन किया गया

इन्द्रियों के तेज ह्रास और जब मन में सहन-शक्ति नहीं होती, तो मन को बल का ह्रास और जब आत्मा में सहन नहीं रहता, तो बुद्धि में मृत्यु शक्ति नहीं रहती, औसान खतम हो जाता है उदाहरण ! एक व्यक्ति चाहता है कि मैं प्रचार करूं, जप ध्यान घटों तक बैठा रहूं। मन चाहता है, बुद्धि बाणी बल है, मगर शरीर सहन नहीं कर सकता, यात्रा को सर्दी-गर्मी को दूसरा शरीर दृढ़ है बुद्धि बल भी है, कोई प्रतिकूल सुनने पर बाणी कठोर, या मिथ्या असत्य बोल देती है लोभ की खातिर बाणी से छल करता है, तो बाणी का तेज नहीं रहता, आंख से बुरी दृष्टि करता है, स्त्री को देखा तत्काल आंख विचलित हो गई, तब आंख में तेज नहीं रहता। मोह और काम के कारण आँख में सहन नहीं रहता, और अहंकार के कारण मन घृणा करता है, सहन नहीं करता, तो मन का बल चला जाता है दूसरे की पाठ पूजा आवरण को अपने-अपने मत अनुकूल न देखकर अपने या अपने रहनुमा ही के गुरु, नेता या मतधर्म की निन्दा को सहन नहीं कर सकता, और आपे से बाहर हो जाता है, यह आत्म तेज का ह्रास है।

* समाप्तम *

CamScanner से स्कैन किया गया

पूज्य महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज का प्रकाशकों के नाम सन्देश

मुझे तो केवल यही विचार अधिक रहता है, कि प्रभु की दात, जो मुझे मिलती है और ऋषियों मुनियों का जो ऋण हम स्वाध्याय से अपने ऊपर लेते हैं और स्वयं लाभ उठाते हैं, बांट कर खांवे। मैं उपदेश या दात बेचना अपने लिए पाप समझता हूं। पुस्तक विक्रेता दुकानदारों के लिए पाप नहीं, उनका भी यह यज्ञ और परोपकार हो जाता हैं, जब वे लोगों की भलाई को दृष्टि में रख कर यह पेशा अपनावें।

गरीब लोग वास्तव में प्रभु के मार्ग पर चलने की इच्छा रखते हैं, वह भारी दाम से पुस्तक मूल नहीं ले सकते और वञ्चित रह जाते हैं। धनी लोग तो प्रभु को समझते ही नहीं कि वह उनका कुछ लगता भी है कि नहीं। मुझे संसार में अधिक चिंता गरीबों की है।

जब पुस्तक विक्रेता न छापेंगे, या हमारी जरूरत पड़ने पर न छपवायेंगे तो फिर हम स्वयं छपवायेंगें या उचित प्रबन्ध करेंगे, इसलिए मेरा निवेदन है कि पुस्तक का मूल्य उचित रखा जावे।

तिथि १९-११-३९ प्रभुआश्रित (टेकचन्द)

CamScanner से स्कैन किया गया